243
926 P
H
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1233/1012

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 926

891.431
Sh23Sw

स्वतंत्र भारत का शंखनाद अथवा

भविष्यवाणी

भारत के हृदय सम्राट

महात्मा मोहनदास करमचंद गांधी

Bhatt Fine Printing Works Gannagali Lucknow.

Hindu Social Reform Vimal Granth-mala Series No. 18.

॥ बन्देमातरम् ॥

स्वतंत्रभारत का शंखनाद

अथवा

भविष्य वाणी

तुम्हारा जितना जी चाहे सितम मजलूम पै ढालो ।
कलेजा चीर डालो मेरी आंखों को निकलवालो ॥
मेरी नस नस को छेदो और रग रग मेरी कटवालो ।
ये हाजिर है बदन मेरा इसे कोल्हू में पिलवालो ॥
मगर मैं देश सेवा का जो प्रण है वह न तोड़ूंगा ।
रहूँगा सत्य पै क़ायम न छोड़ा है न छोड़ूंगा ॥
"विमल"

संपादक लखनऊ निवासी—
पं० अवधविहारीलाल शर्मा "विमल"

प्रकाशक—
विमल ग्रंथमाला आफिस
सआदतगंज लखनऊ ।

All Right Reserved.

प्रथमवार १००००] सन् १९३० ई० [मूल्य -)॥

मुद्रक—पं० द्वारकाप्रसाद तेवारी प्रिंटर व प्रोप्राइटर
भारत भूषण प्रेस लखनऊ ।

बिमल ग्रंथमाला की अपूर्व पुस्तकें

बिमल ग्रन्थमाला की पुस्तकों का हिन्दू समाज में इतना अधिक मान क्यों हुआ ? इसका उत्तर यही है कि इनके मनोहर गाने घर-घर में आर्य-हिन्दू ललनायें और कन्यायें बड़े प्रेम से गाती हैं। लोग सैकड़ों की संख्या में मँगा कर इन्हें पुत्र-पुत्रियों एवं बहुओं को देते, कन्या-पाठशालाओं में बांटते, तथा ब्याह-शादी आदि उत्सवों में वितरण करते हैं:—

ईश्वर-विनय ... ... -)॥	सुदर्शनचक्रचर्खा गान ... -)॥
नारी संगीत-रत्न(प्रथमभाग) -)॥	अछूत पुकार ... ... -)॥
,, ,, (द्वितीय ,,) -)॥	राष्ट्रीय झंडा अथवा
सती-सीता ... ... -)॥	स्वदेश और स्वदेशी ... -)॥
पति पत्नी प्रतिज्ञा ... -)॥	स्वतंत्र भारत का संखनाद
अनमेल-विवाह ... -)॥	अथवा भविष्य वाणी ... -)॥
विधवा-बिलाप ... -)॥	क्राँति का सिंहनाद अथवा
औंधी खोपड़ी ... ... -)॥	म० गांधी का आल्टीमेटम -)॥
कन्या-संगीत-रत्न ... -)॥	स्वदेश का सन्देश ... -)॥
वेश्या-दोष दर्शन ... -)॥	साबित्री सत्यवान ... =)
जुआ-दोष-दर्शन ... -)॥	नारी-संगीत-रत्न (चारों भाग) ।=)
नशा-दोष-दर्शन ... -)॥	स्त्री-शिक्षा-गायन ... =)

आवश्यक सूचना—सावधान ! सावधान !! लोभ में आकर कोई महाशय बिमल-ग्रंथमाला की पुस्तकों के गाने चुराने वा दूसरी लिपि में छापने की चेष्टा न करें, अन्यथा वे न्यायालय से दण्डित होकर भारी हानि उठावेंगे !!!

प्रचारकों और बुकसेलर जगह जरूरत है।

नियम इत्यादि पत्र भेज कर मालूम करें। माल चौथाई पेशगी पाने पर भेजा जाता है। १) से कम बी० पी० नहीं भेजा जाता है।

पत्र इस पते से भेजें—

संचालक बिमल-ग्रंथमाला आफिस

सआदतगंज लखनऊ।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 928
Date 27.12.51
GOVT. OF INDIA

स्वतंत्र भारत का शंखनाद

अथवा

भविष्यवाणी

ईश्वर प्रार्थना

गजल

भगवान भक्त मुझको भारत का तू बना दे।
और देश हित की तन में एक आग सी लगा दे॥
कर्तव्य पथ से हर्गिज़ पीछे कदम न रक्खूं।
सत ब्रत्य धैर्य धारण करना मुझे सिखा दे॥
स्वतंत्रता की लहरें हरदम हृदय में उट्ठें।
परतंत्रता की बू को दिल से मेरे मिटा दे॥
बातें खुशामदाना करना कभी न सीखूँ।
चाहे उदू बिलाशक सीने पै गन लगा दे॥
जो बात हक हो कह दूं कह कर कभी न लौटूं।
जल्लाद चाहे तन के टुकड़े मेरे उड़ा दे॥
"पूरन" को यह विनय है हे दीन बंधु भगवन।
भारत के हर बशर को आज़ाद तू बना दे॥

खंजर की।

गजल

सुना है तेज करते हैं दुबारा धार खंजर की।
करेंगे आज़मायश क्या मुक़र्रर वह मेरे सर की॥
सबब पूछा तो यों बोले नहीं ज़ाहिर खता कोई।
मगर कुछ देख पड़ती है शरारत दिल के अन्दर की॥
उजाड़े घोंसले कितने चमन बरबाद कर डाले।
शरारत उनकी नस नस में भरी है खूब बन्दर की॥
चलेंगी कब तलक देखें यह बन्दर घुड़कियां उनकी।
नचादेगी उन्हें भी एक दिन लकड़ी क़लन्दर की॥
मेरे दर्दे जिगर में आह में नाले में शीवन में।
नज़र आती है हरसू सूरते ज़ालिम सितमगर की॥
खमीदा करके गर्दन को कहा तेग आज़माई हो।
रह गई कब्ज़ये कातिल में खाली मूठ खंजर की॥

गजल

२—क्यों दुनियां में रुसवाई न हो?

हालते अबतर जिसे अपनी नजर आई न हो।
क्या अजब है अक्ल खुदगरजी से चकराई न हो॥
गैर जो देखें हमें टेढ़ी नज़र से क्या मजाल।
खून का प्यासा अगर भाई ही का भाई न हो॥
धन के मद में होके अंधा जो कुचल दे कौम को।
ऐसे हत्यारे की क्यों दुनियां में रुसवाई न हो॥
हो जिमीदारी भी पाई, पाई हो दौलत कसीर।

खाक पाई उसने गर इंसानियत पाई न हो॥
गिर गया जो चार की नजरों से सच मुच गिरगया।
है पतित वह गो हया से आँख शर्माई न हो॥
पाप की थाली में जो होजांयगे मुक्खड़ शराक।
सब करेंगे उनपे शक रिश्वत कहीं खाई न हो॥
फर्ज अपना किस तरह पहचाने वह नादां बशर।
इल्म से या अक्ल से जिनको शिनासाई न हो॥
चौंक उठे वह नाम हमदर्दी का सुन कर चल दिये।
मुस्कराया मैं तबीयत उनकी झुंझलाई न हो॥
कौम के दुख दर्द से वाकिफ़ हो कोई क्या "कमल"
दर हकीकत कौम का जब तक कि शैदाई न हो॥

महात्मा गांधी की गिरफ्तारी पर भारतीयों को चेतावनी

गज़ल

गये हैं कृष्ण मंदिर गाँधी जी कौम के खातिर।
तो तन मन धन से हो हमको फिकर उनके छुड़ाने की॥
लगन सच्ची लगाओ देश की दिल में प्रतिज्ञा कर।
वह उल्फतही है क्या जो सिर्फ दुनियाँ के दिखानेकी॥
जहाँ पर बरसी हों हुन्नें रही जो खान रत्नों की।
उसी भूमी पे किल्लत हो रही है दाने दाने की॥
अगर यह चर्ख फिर जाये तो फिर ने दो उसे लेकिन।
तुम्हारे दिल के अन्दर फिक्र हो चर्खा चलाने की॥
विदेशी कपड़ों को अपने वतन से दूर तुम कर दो।

तुम्हारा ध्यान हो खद्दर स्वदेशी के बनाने की ॥
नशेबाज़ी के जो सारे व्यसन हों दूर कर दिल से।
करो पूरी यही कोशिश पिकेटिंग के कराने की ॥
तजो यह घोर निद्रा कुंभकरणी नींद को त्यागो।
तुम्हारी डिवटी हो सोते हुवों को अब जगाने की ॥
न अब वेहोश तुम सोना जरा हुशियार हो जावो।
करें तदबीर वह लाखों अगर तुम को सुलाने की ॥
चले कुछ पेट के बल गोलियों से कुछ गए मारे।
भुलाना याद मत नंगे बदन पर कोड़े खाने की ॥
डुबाना नाम मत भारत का बीरो शर्म कुछ खावो।
शिवा परताप की कुछ याद करना बीर बाने की ॥
हमारी दुश्मनी हरगिज न हम दुश्मन किसी के हैं।
ये दिल से चाहते हैं हो मुहब्बत कुल जमाने की ॥
मगर परतंत्र होकर जीना मरना इससे बेहतर है।
करें फिर हम न क्यों तदबीर आजादी के पाने की ॥
करो कुछ कौम की सेवा कहा "परकाश" का मानो।
कोई सूरत निकालो देश में फिर मुंह दिखाने की ॥

मुन्नूलाल वर्मा प्रकाश

मेरी ख्वाहिस

गजल

कलामे हक को जो मुस्लिम समझता अपना लीडर हो।
खुदा को औ मुहम्मद की कमेटी का वो मेम्बर हो ॥
डिटेक्टिव दो फरिश्ते राईटर नेकी बदी के हैं।
मुकाबिल उनके दुनियां में न कोई इन्सपेक्टर हो ॥

जो होवे पास रोजे हश्र के एक्ज़ामिनेशन में।
तो फिर जन्नत के जाने में उन्हीं का फस्ट नम्बर हो॥
नबी के पोस्ट आफिस में खुदा की डाक आती है।
न क्यों जिब्रील हरकारा हो जब कुराँ का लेटर हो।
सुराते हश्र के पुल से गुज़रना उसका क्या मुशकिल॥
शरायत रोड पर जिसकी चली दुनियां में मोटर हो॥
भला बन्दों को क्या गम उम्मते आसी का क्या खतरा।
खुदा सा इम्परर हो जब मुहम्मद सा मिनिस्टर हो॥
हमें खौफ़ो खतर क्या इन किलावाते जमाने से।
मोहम्मद जब खुदा के कारखाने का मैनेजर हो॥
स्पिशल को मुसलमानों की हो फिर किस तरह खटका।
नबी ने जब कि स्टेशन पै दीया लायन क्लीयर हो॥

४–असहयोगियों का प्रण

यह पुण्य भूमि अपनी जीवन प्रदायनी है।
संपत्ति में हमारी अब यह इनी गिनी है॥
रखते नहीं हैं मनमें हम और कामनायें।
धुन है स्वदेश ही को बैकुंठ अब बनाये॥
मर कर अगर मिली भी तो मुक्ति क्या करेंगे।
लेगें न स्वर्ग भी हम अबतो स्वराज्य लेंगे॥

(१)

क्या भीक माँगते हैं निज हाथ हम पसारे।
मिल जायगा हुई जो ऊपर दया हमारे॥
यह स्वत्व है हमारी अधिकार है हमारा।
यह भूमि है हमारी है स्वीय देश प्यारा॥

जिससे पले उसी को सर्वस्व अर्प देंगे।
लेगें न स्वर्ग भी हम, अबतो स्वराज्य लेंगे ॥

(२)

हम योग्य बन चुके हैं हम सभ्य हो चुके हैं।
अब जाग हम चुके हैं सदियों तो सो चुके हैं ॥
साम्राज्य में हमारा भी एक हाँथ होवे।
अब भारतीय शासन में देश साथ होवे ॥
सारा प्रबन्ध अपना हम आपही करेंगे।
लेगें न स्वर्ग भी हम अबतो स्रावज्य लेंगे ॥

(३)

मानों कि तुम न मानों हम मानते नहीं हैं।
तजना स्वराज्य धुन का हम जानते नहीं हैं ॥
जो ठान कर हृदय में इस राह चल पड़े हैं।
ले स्वावलम्बनाश्रय जिस बात पर अड़े हैं ॥
हो जाय यदि प्रलय भी वह धुन न हम तजेंगे।
लेगें न स्वर्ग भी हम अबतो स्वराज्य लेंगे ॥

(४)

श्री राम के हृदय में जो एक धुन समाई।
जिससे विजय उन्हो ने लंकाधिपति पै पाई ॥
उत्साह ने जलधि में विस्तीर्ण पुल बंधाया।
फिर वन्य बानरों से सौहार्द था कराया ॥
हम भी उन्हीं सरीखे उत्साह से बढ़ेंगे।
लेंगे न स्वर्ग भी हम अब तो स्वराज्य लेंगे।

(५)

दासी बनी रहेगी क्या श्याम राम माता।
था जो "प्रताप" शिव है हम से वही है नाता।
हैं भारतीय हम भी उस गोद में पले हैं॥
खेलेहजारों जिसमें रणधीर मन चले हैं।
प्रण पर अटल रहेगें टाले नहीं टलेंगे।
लेंगें न स्वर्ग भी हम अबतो स्वराज्य लेंगे॥

(६)

भूलेंगे हम नहीं अब भ्रम में हम भुलायें।
यह राज नीतियाँ जो बन बन के अफसरायें।
हम व्यास पुत्र होकर उनको निकाल देंगे।
चलने न गोपि नन्दन की भाँति चाल देंगें॥
निर्भीक हम हमेशा कहते यही रहेंगे।
लेंगें न स्वर्ग भी हम अबतो स्वराज्य लेंगे॥

विदेसी शासन

गजल

अजब हैं दुनियां के लोग नाहक, पराये धन पर मचल रहे हैं।
न खौफ़ इनको जरा खुदा का, कजी की चालें जो चल रहे हैं॥
कहो भला उनका कैसे होगा, जो खारहोते हैं राह हक में।
धरम व ईमाँ को ताक में रख गरीबों को जो कुचल रहे हैं॥
बला से उनको मरे कोई औ, जिये कोई वो तो चैन से हैं।
कमाई से वह तो दूसरों की, पलंग पै करवट बदल रहे हैं॥
मगर न जूं तक भी रेंगती है, तुम्हारे कानों पै सोने वालो।

तुम्हारी अस्ती के सांप हैं यह, तुम्हारे धन से जो पल रहे हैं ॥
समझ रहे हैं खलक खुदा में, हमी हैं अशरफ हमी हैं ईसा।
खुदी के जामें को पहन करके, खुशी से हरदम उछल रहे हैं ॥
न देंगे हक हम किसी को हरगिज, हुये हैं पागल जो मांगते हैं।
खयाल पोचो लचर ये उनके, दिलों दिमागों में ढल रहे हैं ॥
न पार पाते हैं और ढंग से, तो गोली गोलों से काम लेते।
समझते हैं दिल की मिलकियत पर, इसी तरह कर दखल रहे हैं ॥
दिया है हमको भी दिल खुदा ने, दिमाग रखते हैं कुछ तो हमभी।
सताओ कब तक सताओगे तुम हम चोटें खा खा सँभल रहे हैं ॥
यकीं है अबकी न फेल होंगे मिले हैं उस्ताद ऐसे पक्के।
जो "इन्द्र" मक्तल में वार सदहा अचल रहे हैं अटल रहे हैं ॥

चेतावनी

गजल

हथकड़ी जो हाथ में डाली गई सर्कार है।
देश के आजाद करने का यही हथियार है ॥
फूंक देगी इस तरह से मिस्ले लंका की तरह।
आहपुर तासीर यह जंजीर की झनकार है ॥
जेल का किसको है खतरा किसको है सूली का डर।
देश पर कुर्बान होने को हर एक तैयार है ॥
बच्चा २ हिन्द का है हो गया सीना सिपर।
रंग लायेगा बदन का खून फिर एक बार है ॥
रायसाहब, एम० ए०, बी० ए०, खाँ बहादुर कोई हो।
वीर है सच्चा वही जो देश का गमख्वार है ॥
जिनको डर हो जेल का फांसी का खतरा हो जिन्हें।

चूड़ियां वह लें पहन उनका यही सिंगार है ॥
मर्द कहना आज से अपने लिये वह छोड़ दें ।
जो चापलोसी के लिये जोरू सा तावेदार है ॥
तेग हो तर्के तआवुन की स्वदेशी की हो ढाल ।
फिर "बहादुर" देश अपना अपना कारोबार है ॥

बलिदान-गान

चाहती है माता बलिदान, जवानों उठो हिन्द संतान ।
हँसते हुये फूल से आकर, शीश झुकादो माँके पगपर ॥
कटता हो कटजाने दो सर, तनिक न हो हैरान ॥ जवानों०
सोनेवालो उठो कड़ककर, जागे हुये बढ़ो वेदी पर ।
बूढ़ा हो नारी हो या नर, सबको है आह्वान ॥ जवानों० ॥
हो चमार भंगी या पासी, विप्र पुजारी या सन्यासी ।
धनी दरिद्रो हो उपवासो, सबका भाग समान ॥ जवानों०॥
उठो अपढ़ मूरख विद्वानों, हिन्दू मुसलिम और किसानो ।
जैन पारसी सिक्ख महानो, प्यारी माँके प्रान ॥ जवानों० ॥
ओ छात्रो ! भावी अधिकारी, उठो २ निद्रित व्यापारी ।
उठो मजूरो दीन भिखारी, दुखी दरिद्र किसान ॥ जवानों०॥
हो गुलाम कैसा ही दासी, वर्तमान शासन अनुरागी ॥
नरम गरम बैरागी त्यागी, उठो सभी मतिमान ॥ जवानों० ॥
स्वार्थ और मतिभेद मिटाओ, वैरफूट को दूर भगाओ ।
फहराओ तुम आज हिन्द में, इक जातीय निशान ॥ जवानों॥
फाँसी चढ़ो जेल में जाओ, भयवश कभी न देश भुलाओ ।
हथकड़ियों पर मिलकर गाओ, स्वतंत्रता का गान ॥ जवानों०
पूरन करो यज्ञ माता का, ज्यों प्रताप अभिमानी बाँका ।
ज्यों शिव सूर्य हिन्द गुरुता का, जैसे तिलक महान ॥ जवानों०

मीठी मगन झंकार सुबारो, गाँधी बीणा को अतिप्यार
"माधव" मस्त उठो दिखलादो, काला में है जान ॥जवानो॥

गजल

महात्मा गांधी की गिरफ़्तारी पर

जेल जाने को हम उम्मीदवार बैठे हैं।
देखले देखलो साहब तयार बैठे हैं॥
हमारे पूज्य महात्मा को तुमने कैद किया।
उन्हीं कि याद में हम खाये खार बैठे हैं॥
अब न मानेगा ए कानून तुम्हारा कोई।
हिन्द के लाल यहां बेशुमार बैठे हैं॥
सौ बनाते हैं नमक एक कैद होता है।
इसी से तो बहुत उम्मीदवार बैठे हैं॥
साफ़ कहदीजिये खाने को नहीं जेलों में।
हमतो व्रत करने को तब भी त्यार बैठे हैं॥
जगह नहीं है अगर जेल में काफी साहब।
जहां कहदोगे वहीं को तयार बैठे हैं॥
"इन्द्र" कहते हैं कि हरगिज़ न बुजदिली करना।
कफन खद्दर का हम बांधे तयार बैठे हैं॥

संदेश

गज़ल

ज़रा भारत सपूतों ख्वाब से बेदार हो जाओ।
खुमारे बे खुदी को छोड़दो हुसियार हो जाओ॥

कमर बाँधो दिखादो मर्द माने हिन्द की हिम्मत।
देश के वास्ते अय दोस्तो तय्यार हो जाओ॥
महाभारत था एक वह हम हुये बरबाद थे जिसके।
दिखाओ अक्स उसका कुश्तये तलवार हो जाओ॥
हुई है निस्फ सदी से अजब मिट्टी पलीद अपनी।
गजब अब भी न चेतो इस कदर जब ख्वार हो जावो॥
उठो दिल खोल कर तुम अपने कौलो धर्म के खातिर।
सफये कोमी में तुम अपने सिपह सालार हो जाओ॥
दिखाओ इस कदर "इकबाल" अब जोसे शबाब अपना।
तुम्हीं तुम हिन्द से ता काबुलो कन्धार हो जाओ॥

वेकशों का ईश्वर

गजल

कौन कहता है मुसीबत में कोई यार नहीं।
उसका हामी है खुदा जिसका मददगार नहीं॥
हमसे मिलने के लिये आप जो तय्यार नहीं।
हम भी खाते हैं कसम तुम से सरोकार नहीं॥
हमसे जब तक थी गरज और थे अब हैं कुछ और।
कल वफ़ादार थे हम आज वफ़ादार नहीं॥
जिस्म फानी को अगर कैद भी किया तो क्या।
रूह कहते हैं जिसे वह तो गिरिफ्तार नहीं॥
जेल तो चीज ही क्या अपने वतन के खातिर।
सरभी दे दूगाँ खुशी से मुझे इनकार नहीं॥
खादिमें मुल्क हैं खादमियत है पेशा उनका।
हम गुलामी की वजारत के तलबगार नहीं॥

तुमने रक्खा है कदम जंग में आगे "मन्ना"।
कमर में तीर नहीं हाथ में तलवार नहीं॥

"मन्नालाल" ढिढोरिया लखनऊ

चेतावनी

गजल

अगर स्वराज्य भारत में तुम्हें इस साल में लाना।
तो हरगिज चाल बाजों की न अब तुम चाल में आना॥
अगर आपस के झगड़े हों तो उनको तै करो घर में।
कचहरी फ़ौजदारी में न हरगिज माल में जाना॥
अगर यह वक्त हाथों से गँवाया तो समझ लेना।
तो पशुओं की तरह सदहा तुम्हें हैं ठोकरें खाना॥
सदा जकड़े रहोगे फिर गुलामी की जंजीरों में।
जो छोड़ा ध्येय अपना तो है मुशकिल पार ही पाना॥
परिश्रम हम करें डटकर मज़ा लूटें वो लंदन में।
तुम्हें अब ऐसी परदेशी हुकूमत को है मिटवाना॥
विदेशी वस्तु को दिल से करो अब दूर ऐ मित्रो।
तुम अपने देश का धन अब विदेशों में न भिजवाना॥
मनाने को तुम्हें करते हैं बैठक राउंड टेबुल की।
न हरगिज ऐसे मक्कारों पै अब इतबार तुम लाना॥
ये कहते 'इन्द्र' हैं तुमसे सुनो भारत के ऐ वीरो।
वतन आज़ाद अब करलो न गैरों के सहो ताना॥

चेतावनी

गज़ल

हुआ है हुक्म ये जारी पहन लो केसरी बाना।

सजाओ सैन अपनी तुम तुम्हें है जंग में जाना ॥
सुनो भारत के ऐ बीरो न दिल में सोचकुछ करना।
सामना मौत का भी हो न चेहरे पर शिकन लाना ॥
बुज़ुर्गों के लहू का कुछ असर है जिस्म के अन्दर।
शिवा परताप की कर याद तुम भुजदंड फड़काना ॥
नमक सत्याग्रह भारत में अब जो हो चुका जारी।
बनाओ खुद व घर घर में यही पैगाम पहुँचाना ॥
हो चलती गन मशीनों की अगरचे गोलियां सनसन।
दिखाना अपना सीना खोल मत पीछे को हट जाना ॥
अगर जो लाठियाँ तुम पर चलाये यह पुलिस फ़िर भी।
न करना ओफ़ मुँह से तुम न दिल में अपने घबराना ॥
दमन की नीति करदेगी दमन उनको अवश मित्रो।
अगर कुछ आह में तासीर है तो देखते जाना ॥
अहिसाँ के पुजारी बन दिखादो तुम गनीमों को।
कदम पीछे नहीं रखते हैं बीरों का यही बाना ॥
निकालो "इन्द्र" अपना हौसिला इस युद्ध में पहिले।
सभी का ध्येय है भारत को अब आज़ाद करवाना ॥

भविष्य बाणी

गजल

७ अप्रेल सन् १९३० के बर्तमान से उद्धृत पर

लिखी है देहली के एक ज्योतिषी ने यह भविष्यबाणी।
मैं लिखता हूँ वही कुछ हाल जो कुछ आज कल होगा ॥
प्रथम अप्रेल से उन्नीसवीं अप्रेल तक यारो।
महात्मा की गिरिफ्तारी की चर्चा का सोग़ल होगा ॥
अगर होगी गिरिफ्तारी न सोला एप्रिल तक फिर।

बनावेंगे नमक श्री गांधी कारज सुफल होगा ॥
व सोला एप्रिल से तेइसवीं अप्रैल के अन्दर।
गिरफ्तारी की है सम्भावना मसला न हल होगा ॥
अगर इस बीच में गांधी हुये नहिं कैद पे मित्रो।
पाँच से आठ मई को कैद हो इसमें न बल होगा ॥
और अप्रैल सोला से आठवीं जून तक जग में।
होगया फिर दमन घनघोर रुख उसका प्रबल होगा ॥
नतीजा उसका यह होगा कि लाखों जेल जायेंगे।
बीर है वह जो अपने दृढ़ प्रतिज्ञा पर अटल होगा ॥
आठवीं जून से फिर दूसरी जौलाई तक सुनिये।
दमन होजायगा ठंढा व दिल उनका बिकल होगा ॥
दूसरी फिर जुलाई से सितम्बर तीन तक में फिर।
महात्मा गांधी का काम फिर जगमें सबल होगा ॥
तभी सरकार बैठेगी सिमट कर एक कोने में।
ये देखेगी कि सच्चा ज्योतिषी का क्या रमल होगा ॥
अन्त लाचार होकर तीन से ग्यारा सितम्बर तक।
गिरफ्तारी करेगी और नहीं कुछ भी खलल होगा ॥
बहुत भारी उठाना हानि हो सरकार को इसमें।
लिखा मज़मून यह जो कुछ नहीं रद्दो बदल होगा ॥
और इक्कीस अक्टोबर नवम्बर ग्यारा के अन्दर।
ख़ुशी से ग्यारा शर्तों पर उन्हें करना अमल होगा ॥
तीसरी जनवरी से फ़रवरी हो बीस की जिस दिन।
अचल होगी यही शर्तें व अपना फिर दखल होगा ॥
अगर ईश्वर की दाया है महात्मा की विजय होगी।
"विमल" आनंद होगा दिल खिला मिस्ले कमल होगा ॥

* इति *

स्वदेश का सन्देश

स्वतंत्रता संग्राम के सेनानायक
पं० जवाहिरलाल नेहरू

सञ्चालक विमल ग्रंथमाला आफिस सआदतगञ्ज लखनऊ